13 - हौसला

जुलाई का दूसरा सप्ताह। पंद्रह जुलाई सन् उन्नीस सौ उन्यासी। अपनी माँ के साथ हमारी कक्षा में एक बच्चा आया। उसका उसी दिन खिला हुआ था। नाम-माइकल। स्वस्थ, गोल-मटोल। छोटी-छोटी आँखें, घुँघराले बाल, हँसता हुआ-सा चेहरा। कुछ ही दिनों में अपने व्यवहार और प्रतिभा के बल पर वह कक्षा में सबकी आँखों का तारा हो गया।

माइकल कब मेरा सबसे खास दोस्त हो गया, मुझे भी पता न चला।

साथ-साथ रहना, खेलना, पढ़ना, खाना-पीना। मित्र के साथ-साथ वह मेरा प्रतिद्वंद्वी भी था। कक्षा में सबसे अधिक अंक पाने के लिए हम दोनों में होड़ लगी रहती। वह संगीत में प्रथम रहता तो मैं खेल में। माइकल चित्रकला में पुरस्कार पाता, मैं भाषण में। उसे गणित में ज्यादा अंक मिलते तो मुझे हिंदी में।

एक दिन सुबह स्कूल खुलते ही प्रधानाचार्य जी ने हमें अपने कक्ष में बुलवा लिया। बोले, "बेटा, तुम दोनों ने हमारे विद्यालय का सदैव गौरव बढ़ाया है। चेन्नई में बच्चों की राष्ट्र स्तरीय प्रतियोगिता होने वाली है। मैंने वहाँ के लिए तुम दोनों का नाम भेज दिया है। मैं चाहता हूँ, कि तुम देश भर में अपने विद्यालय का नाम रोशन करो। तुम्हारी शिक्षिका मंजीत साथ रहेंगी। अगले सप्ताह ही जाना होगा, इसलिए मंजीत जी से मिलकर तैयारियाँ कर लो।" हमारी खुशी का ठिकाना न रहा। मंजीत मैडम से मिलकर बात की और जी-जान से प्रतियोगिता की तैयारियों में जुट गए।

पूरे एक सप्ताह तक हम चेन्नई में रहे। विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। माइकल ने संगीत में स्वर्ण पदक जीता, मैंने भाषण में। हमें और भी कई पुरस्कार मिले। वहाँ कई प्रदेशों के बच्चे हमारे दोस्त बन गए। अब हम जल्द से जल्द घर पहुँचकर इस खुशी को सबसे साझा करना चाहते थे। बस पकड़ने की जल्दी में माइकल ने चैराहे पर जली लाल बत्ती नहीं देखी और दूसरी ओर से आ रहे वाहन की चपेट में आ गया। होश आने पर वह अस्पताल में था और दोनों पैर गँवा चुका था। रंग में भंग पड़ गया। सबकी आँखों में सिर्फ आँसू थे।

सुना था कि विपत्ति कभी बताकर नहीं आती। कई बार हमारी जरा-सी असावधानी जीवन भर का दुख बन जाती है। वापसी में ऐसा ही हुआ। इस बीच माइकल के पिता जी का तबादला चंडीगढ़ हो गया। अपनी माँ, पिता जी और बहन के साथ माइकल शहर छोड़ रहा था तो लग रहा था जैसे मेरे शरीर से कोई प्राण ले जा रहा है। माइकल चंडीगढ़ जा चुका था। कुछ दिनांे तक दीदी की चिट्ठियाँ आती रहीं, जो धीरे-धीरे कम होती गईं। वर्षों के अंतराल ने हमें एक दूसरे से लगभग दूर कर दिया था।

शिक्षा पूरी करने के बाद मैं अध्यापक बन गया। कक्षा के बच्चों में अभी भी मेरी निगाहें माइकल को ढूँढ़ती, पर माइकल का कहीं कोई अता-पता न था। कहते हैं, इतिहास खुद को दोहराता है। लगभग ऐसा ही हुआ। अपने विद्यालय के बच्चों की टीम लेकर मुझे मुम्बई जाना पड़ा। इस बार मैं बहुत सावधान था। ”सभी बच्चे यातायात के नियमों का पालन करेंगे“ मैंने चेतावनीपूर्वक कहा।

प्रतियोगिताओं का उद्घाटन प्रारम्भ हुआ। उद्घोषक ने बताया कि उद्घाटन एक महान संगीतज्ञ के द्वारा किया जाना है। परदे के पीछे से वाद्य-यंत्र बजना प्रारंभ हुए। मंच पर धीरे-धीरे अंधकार से प्रकाश फैलने लगा। व्हील चेयर (पहिया कुर्सी) पर माइक हाथ में थामे मुख्य अतिथि मंच पर आए। सभी ने तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत

किया। अरे ! यह तो मेरे बचपन का मित्र माइकल है - मैं चैंक उठा। मेरी आँखें खुशी से भर आईं। माइकल ने बेहद मधुर गीत सुनाया। गाते-गाते उसकी दृष्टि मुझ पर पड़ी। मैंने हाथ हिलाकर अभिवादन किया। कार्यक्रम समाप्त होते ही मैं दौड़कर मंच पर गया। माइकल ने मुझे गले लगा लिया। "हम दोनों बचपन के मित्र हैं"- माइकल ने मेरे विद्यार्थियों को बताया। इसके बाद माइकल हम सबको वहाँ ले गया, जहाँ वह रुका हुआ था।

उसने बताया - "तुम्हें याद है न अवनीश वह दुर्घटना। टाँगें गँवा देने पर मैं जीवन से निराश हो गया था। अपने आप को अक्षम समझने लगा था। उस समय रोज़ी दीदी ने मुझे हताशा से उबारा। दीदी मुझे संभालतीं, किताबें लातीं, कैसेट लातीं। उन्होंने मुझे गिटार भी लाकर दिया। 'तुम एक दिन जरूर प्रसिद्ध संगीतकार बनोगे' दीदी कहतीं। धीरे-धीरे मैंने संगीत का अभ्यास प्रारंभ किया और अपने सपने को साकार किया। मैं अपना एक संगीत का स्कूल भी चलाता हूँ, जहाँ तमाम बच्चे मुफ्त में संगीत सीख रहे हैं।"

बच्चे उत्सुकता से माइकल की बातें सुन रहे थे। वह कह रहा था, "प्यारे बच्चो! बड़ी से बड़ी विपत्ति भी सब कुछ समाप्त नहीं करती। विपत्ति के समय हौसला बनाए रखना जरूरी होता है। अगर आपमें हिम्मत है, हौसला है तो आपको अपना लक्ष्य प्राप्त होकर रहेगा।"

अभ्यास

शब्दार्थ-

बुलंदी = ऊँचाई,

उत्कर्ष प्रतिद्वंद्वी = मुकाबला करने वाला

दाखिला = प्रवेश

प्रतियोगिता = होड़

प्रतिभा = असाधारण बुद्धिमत्ता या गुण

हौसला = उत्साह

लक्ष्य = उद्देश्य

हताशा = निराशा

अंतराल = कालों के मध्य का अवकाश

1. बोध प्रश्न: उत्तर लिखिए -

(क) माइकल किस गुण के कारण सबकी आँखों का तारा हो गया था ?

(ख) माइकल के साथ दुर्घटना क्यों हुई ?

(ग) दुर्घटना से माइकल पर क्या प्रभाव पड़ा ?

(घ) रोज़ी ने माइकल को हताशा से कैसे उबारा ?

(ङ) माइकल अपना सपना कैसे पूरा कर पाया ?

2. किसने किससे कहा ?

(क) ”बेटा! तुम दोनों ने हमारे विद्यालय का सदैव गौरव बढ़ाया है।“

(ख) ‘‘तुम एक दिन जरूर प्रसिद्ध संगीतकार बनोगे।’’

(ग) “सभी बच्चे यातायात के नियमों का पालन करेंगे।”

(घ) “हम दोनों बचपन के मित्र हैं।”

(ङ) “अगर आपमें हिम्मत है, हौसला है तो आपको अपना लक्ष्य प्राप्त होकर रहेगा।”

3. सोच-विचार: बताइए -

(क) पाठ का शीर्षक 'हौसला' है। इस पाठ को तुम क्या शीर्षक देना चाहोगे ?

(ख) पाठ के प्रारंभ में लेखक ने अपने मित्र माइकल के बारे में कुछ बातें बताईं हैं।

जैसे - स्वस्थ, गोल-मटोल, छोटी-छोटी आँखें, घुँघराले बाल, हँसता हुआ सा चेहरा।

इन बातों से माइकल का हुलिया (शक्ल-सूरत का विवरण) पता चलता है। आप भी अपने किसी दोस्त के बारे में बताइए कि उसका हुलिया कैसा है ?

जैसे - आँख का तारा होना

(ख) नीचे दिए मुहावरों का अर्थ लिखिए, वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

जी-जान से जुटना, रंग में भंग पड़ना, आँखों का तारा होना

(ग) शब्दों का शुद्ध उच्चारण और सुलेख कीजिए -

व्यवहार, प्रतिद्वंद्वी, प्रेरणा, विभिन्न, असंतुलित, सर्वाधिक, दृष्टि

(घ) रिक्त स्थानों की पूर्ति कोष्ठक में दिए गए शब्दों के विलोम शब्दों से कीजिए -

(अंधकार, आशा, रोता हुआ, असावधान, शत्रु)

- बालक की छोटी-छोटी आँखें, घुँघराले बाल और ..... चेहरा था।
- स टीम लेकर मुम्बई जाते समय मैं बहुत ..... था।
- मंच पर धीरे-धीरे ..... फैलने लगा।
- माइकल ने छात्रों को बताया कि हम दोनों बचपन के ..... हैं।
- रोज़ी दीदी ने मुझे ..... से उबारा।
- (ङ) इन वाक्यों को ध्यान से पढ़िए -

भूतकाल, वर्तमानकाल, भविष्य काल-

माइकल ने गाना गाया। माइकल गाना गा रहा है। माइकल गाना गाएगा।

रोज़ी पुस्तक लाई। रोज़ी पुस्तक ला रही है। रोज़ी पुस्तक लाएगी।

अब, नीचे दिए गए वाक्यों के सामने उनके काल लिखिए -

वाक्य काल

- पिता जी ने बहुत सी बातें बताईं। .....
- कल विद्यालय की छुट्टी रहेगी। .....
- रजिया खाना खा रही है। .....
- अगले माह दीपावली है। .....
- राघव और श्रेया व्यायाम कर चुके हैं। .....

5. **आपकी कलम से** -

(क) बस पकड़ने की जल्दी में माइकल ने चैराहे पर जली लाल बत्ती नहीं देखी और दूसरी ओर से आ रहे वाहन की चपेट में आकर अपने दोनों पैर गँवा दिए। आपने भी कोई ऐसी घटना देखी सुनी होगी जो जरा-सी असावधानी के कारण घटी हो, उसको अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) नीचे दिए गए यातायात से संबंधित संकेतों का क्या आशय है? लिखिए -

हॉर्न न बजाएं .....

(ग) हमें सड़क पर चलते समय क्या-क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए ? लिखिए।

6. अब करने की बारी -

यातायात सुरक्षा से संबंधित पोस्टर बनाकर सार्वजनिक स्थानों पर लगाइए।

7. मेरे दो प्रश्न: पाठ के आधार पर दो सवाल बनाइए -

8. इस कहानी से -

(क) मैंने सीखा - .....

(ख) मैं करूँगी/करूँगा - .....

यह भी जानिए -

- हमेशा पैदल पार पथ (जेब्रा क्रासिंग) का प्रयोग करना चाहिए।
- दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहनना अनिवार्य है।
- चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट पहनना अनिवार्य है।
- वाहन को निर्धारित गति सीमा से अधिक तेज न चलाएँ।
- वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग न करें।
- दिव्यांगों को विकास की मुख्य धारा में शामिल करने के उद्देश्य से 16 दिसंबर, 2016 को 'दिव्यांगजन अधिकार विधेयक, 2016' पारित किया गया है।